साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण 17

2020-21

वसंत पर्व के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था ने किया काव्य गोष्ठी का आयोजन

शिकोहाबाद। नगर की शब्दम् संस्था द्वारा वसंत पर्व के उपलक्ष्य में काव्य गोष्ठी का आयो... हिंद लैम्प्स परिसर स्थित संस्कृति भवन सभागार में किया ... कोविड 1... संस्था के कार्यक्रम विगत एक साल से बंद ... किया गया है। कोविड के बीच भी संस्था ... से ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित ... मणिकांचन द्वारा प्रस्तुत ... किरण बजाज द्वारा मुम्बई ... ने कहा-प्यार ...

शिक्षक दिवस पर शब्दम ने किया डॉ. सुबोध को सम्मानित

शिकोहाबाद (सच कहूँ न्यूज)। शिक्षक दिवस पर शब्दम संस्था ने डॉ. सुबोध दुबे का सम्मान हरित कला, बैजयन्ती माला, प्रास्ति पत्र एवं प्रमाण पत्र के माध्यम से उनके निजी निवास पर जाकर किया। डॉ. सुबोध दुबे ने सन 2004 में शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज के नेतृत्व में शब्दम के कार्यों का शिकोहाबाद में सम्पादन किया। वह सन 2007 तक शब्दम से जुड़े रहे। इसके बाद आप हिन्दलैम्प्स से अवकाश प्राप्त करने के साथ ही ... ग्रुप आगरा-मथुरा कैम्पस ... गतिविधियों में अपना योगदान दिया। जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज ने कहा कि डॉ. सुबोध दुबे में सीखने एवं सिखाने के दोनों गुण विद्यमान हैं। एक अच्छा शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता है। जूम मीटिंग के माध्यम से ही मुम्बई से प्रोफेसर नंदलाल पाठक, लखनऊ से उदयप्रताप सिंह, गुड़गांव से मुकुल उपाध्याय, एटा से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, ... से डॉ. महेश आलोक एवं डॉ. अजय कुमार आहूजा ...

शब्दम संस्था द्वारा चार महिलाओं को किया गया सम्मानित

शिकोहाबाद। शब्दम द्वारा कोविड काल के दौरान किए गए समाजसेवा से जुड़े कार्यों के लिए डॉ. संगीता माथुर, श्रीमती ईशा आहूजा, संगीता शर्मा एवं नीतू सिंह का सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष किरण बजाज एवं गीतिका बजाज की मुम्बई से भेजी कविता को पढ़कर सुनाया गया। महिलाओं की ज्वलन्त समस्याओं को अरविन्द तिवारी एवं महेश आलोक ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सभागार में प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रजनी यादव ने की। इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. संगीता माथुर ने कहा कि महिलाओं के लिए सिर्फ स्वयं को स्वस्थ रखना नहीं बल्कि पूरे परिवार को स्वस्थ रखना अनिवार्य है। ... आहूजा ने कोविड काल के दौरान विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा से जोड़ने के लिए ... अनुभवों ... संगीता शर्मा ने बताया उनके सामाजिक जीवन की शुरूआत ही शब्दम के ग्रीष्मकालीन शिविर से हुई। इस कोविड काल में उन्होंने कई संस्थाओं के साथ मिलकर खाद्य सामग्री के पैकेट बांटे। नीतू यादव ने कहा कि उनका जीवन असहाय महिलाओं के लिए समर्पित है। कार्यक्रम में उमा भदौरिया, ... मीना गुप्ता, आर.एन. यादव, रत्नेश कुलश्रेष्ठ, मुकीमा मंजर, आकाश यादव, आशीष यादव, दीप्ती सक्सेना, शशिप्रभा यादव, प्रियम यादव, बुद्धप्रिय गौतम, मधु शुक्ला, सीमा शाक्या, पबीन बेगम ... शर्मा, प्रीती औहरी, कु. ... तान्या जादौन, रिद्धी, सिद्धी ... जादौन, अजय शर्मा, दुर्गा सिंह लवली उपस्थित रहे।

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम्' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से 17 नवम्बर 2004 को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

1. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।
2. विविध भारतीय ललित कलाओं, संगीत एवम् साहित्य को प्रोत्साहित करना।
3. देश विदेश में राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।
4. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।
5. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।
6. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

सम्पर्क:
शिकोहाबाद: दीपक औहरी – 9759213018, मोहित जादौन – 9358361489
शब्दम्, बजाज इलेक्ट्रिकल्स आवासीय परिसर, शिकोहाबाद – 283141
ई–मेल: shabdamhoskb@gmail.com, pmhoskb@gmail.com

www.shabdamhindi.com

शब्दम् न्यासी मंडल

अध्यक्ष

श्रीमती किरण बजाज

उपाध्यक्ष

प्रो. नन्दलाल पाठक
(पूर्व कार्याध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी)

श्री उदय प्रताप सिंह
(पूर्व सांसद व कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)

वरिष्ठ सदस्य

श्री शेखर बजाज
श्री मुकुल उपाध्याय

विशिष्ट सलाहकार

श्री मंज़र-उल वासै
डॉ. अजय कुमार आहूजा
डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया
डॉ. महेश आलोक
डॉ. रजनी यादव
श्री अरविंद तिवारी
डॉ. चंद्रवीर जैन

विशिष्ट आमंत्रित सलाहकार

श्रीमती सुदीप्ता व्यास (न्यूज़ीलैण्ड)

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन 03

सांस्कृतिक कार्यक्रम

देशभक्ति गीत–गायन प्रतियोगिता 04

महिला सम्मान समारोह 05

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र 07

शिक्षक सम्मान समारोह 08

प्रश्नमंच 10

शब्दम् और स्पिक मैके –अनन्त बजाज फाउंडेशन 11

भारतीय चेतना समस्त विश्व को...
– डॉ, ध्रुवेंद्र भदौरिया 12

साहित्यिक कार्यक्रम

शब्दम् 17वाँ स्थापना दिवस समारोह 13

वसंत काव्य गोष्ठी 14

प्रो. नंदलाल पाठक कविता 16

''हिंदुस्तान सबका है''– उदय प्रताप सिंह 17

लिफाफे में कविता – अरविंद तिवारी 18

''लिखना कविता का''– डॉ. सुबोध दुबे 19

कोरोना काल की कविताएँ – महेश आलोक 20

विविधा

जमनालाल बजाज पुरस्कार 2021 21

सुश्री दुर्गा मल्लू गुडीलु 22

अनंत बजाज स्मृति बैडमिंटन टूर्नामेंट 23

श्री उदयप्रताप सिंह को अनुभूति सम्मान 24

डॉ. चन्द्रवीर जैन को डॉ जगदीश गुप्त
सर्जना पुरस्कार 25

मंज़र–उल वासै 'सेवारत्न' सम्मान से अलंकृत 25

शब्दम् द्वारा प्रस्तुत ऑनलाइन जागरूकता 26

मन्नू भंडारी का निधन 28

अध्यक्षीय निवेदन

सहृदयी शब्द साधको !

हेमंती संध्या है.. आपकी, हम सबकी प्रिय संस्था 'शब्दम्' ने, अपने जीवन के सत्रह शरद देख लिए हैं। पर मन क्यों उचाट सा है...बाहर निकल आयी...हरे लॉन के किनारे–किनारे ,पीत पुष्पों से लदे ''टिकोमा'' वृक्षों पर नजर ठहर गयी ... सहसा लगा कि कृष्ण, पीताम्बर धारे खड़े, मुस्करा रहे हैं..मन्द–मन्द ।

चहुँओर फैली प्रकृति को देखकर, मन विचलित हो रहा है कि यदि इसका संरक्षण नहीं हुआ तो क्या संस्कृति भी बच पायेगी ?

प्रकृति की आध्यात्मिक सम्भावनाएँ भी हैं जिससे मानवी सम्पदाओं का आविर्भाव हुआ है। इनका बृहत् कोष ही प्रकृति है। सम्भावना प्रकृति है.. संपदा संस्कृति। प्रकृति की इसी सम्भावना से साहित्य एवं संस्कृति की संपदा का उदय और विकास होता है।

संस्कृति की महनीय उपलब्धता है..सभ्यता। सभ्यता ने कला एवं साहित्य को कौशल और सामग्री देकर उसका संभरण किया है । माना कि सभ्यता, सौंदर्य से सजाया गयी है किन्तु कला का विशाल अन्तराल और अनंत सम्भावनाओं का स्रोत एवं आधार, आज की विकसित सभ्यता ही है जो अंतरिक्ष को भेद चुकी है, चन्द्रमा को धरती पर उतार लायी है।

अब ज़रा सोचिए! यदि प्रकृति ही नहीं रही तो संस्कृति और सभ्यता क्या बचेगी ? विगत की महामारियों एवं इस कोराना काल ने यह यक्ष प्रश्न, हमारे सामने उठाया है। समय तो पहले भी था पर अब तो अति आवश्यक हो गया है कि साहित्य–कला–संस्कृति...से जुड़े संवेदनशील सुधीजन भी प्रकृति की रक्षा के लिए मन–प्राण से जुड़ें।

विगत वर्ष, शब्दम् की सतत एवं वार्षिक गतिविधियाँ कोराना काल से बाधित रहीं। हम अपने नियमित कार्यक्रम, सभाएँ, समारोह, उत्सव नहीं मना पाये। आभासी तकनीकों के द्वारा ई–मेल, जूम, व्हाट्सएप, इन्टरनेट, ई–कार्ड आदि के माध्यम से ,किसी न किसी तरह से जुड़े रहने का, भरपूर प्रयास किया गया। इन सबकी संक्षिप्त रपट आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत है।

मुझे बड़े भारी मन से यह सूचित करना पड़ रहा है कि विषम परिस्थितियों के अंतर्गत शब्दम् जानकी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्रों को स्थायी तौर पर बंद कर दिया गया है। शब्दम् ने इन सिलाई केन्द्रों से 3500 से अधिक छात्राओं को रोजगार परक शिक्षा देकर स्वावलम्बी बनाया, जिनमें से अधिकांश महिलाएँ आज अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार का भरण–पोषण कर रही हैं।

शब्दम् ने सिलाई केन्द्रों को बंद करते समय सिलाई शिक्षिकाओं को सिलाई केन्द्र चलाने के लिए आवश्यक मशीनें व सामान दिए जिससे वे निजी तौर पर सिलाई केन्द्रों को चला सकें व छात्राओं को सिलाई कला सिखाती रहें। मुझे काफी संतोष है कि शिक्षिकाएँ अपने पैरों पर खड़ी हैं और वह अब अपने स्तर पर सिलाई केन्द्रों का संचालन कर, छात्राओं को स्वावलम्बी बनाने का कार्य कर रही हैं।

नव वर्ष आ गया है..... नई सम्भावनाओं और नये विचारों के साथ.....

इस आशा और विश्वास की मंगल याचना के लिए आप सबको नव वर्ष की शुभकामनाएं।

इस अवसर पर मैं सलाहकार समिति के प्रत्येक सदस्य एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हमारे सभी सहयोगियों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। सब के उत्तम स्वास्थ्य और हित चिंतन की प्रार्थना करती हूँ।

काम कुछ तो हुआ है ज़रूर
पर बहुत कुछ अभी है बाकी
क्यारी में फूल खिले तो क्या
सारे चमन में है बहार बाकी.

सस्नेह, नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित,

करण बजाज

सांस्कृतिक कार्यक्रम

गीत-गायन

'शब्दम्' द्वारा आयोजित देशभक्ति गीत-गायन प्रतियोगिता

26 जनवरी 2021, गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में शब्दम् द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी देशभक्ति गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालयों और महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने ऑनलाइन वीडियो भेजकर प्रतिभागिता की।

यह प्रतियोगिता इण्टर वर्ग एवं महाविद्यालय वर्ग हेतु अलग–अलग आयोजित की गयी। इण्टर वर्ग में प्रथम स्थान गोविन्द गर्ग, प्रहलाद राय टिकमानी इण्टर कॉलेज, द्वितीय स्थान अंकित सरस्वती विद्या मंदिर जसलई रोड, अनमोल गुप्ता प्रहलाद राय टिकमानी इण्टर कॉलेज ने प्राप्त किया। महाविद्यालय वर्ग में प्रथम स्थान अंजलि, नारायण महाविद्यालय, द्वितीय स्थान निशा परवीन, बीडीएम कन्या महाविद्यालय तथा तृतीय स्थान दीक्षा, शान्तिदेवी आहूजा महाविद्यालय ने प्राप्त किया। उपर्युक्त के अतिरिक्त कार्यक्रम में राज कॉन्वेन्ट, डिवाइन इंटरनेशनल एकेडमी, ज्ञानदीप विद्यालय, रामशरण विद्या निकेतन, कुँ. आर.सी. महिला महाविद्यालय मैनुपरी ने भाग लिया।

इन प्राप्त वीडियो को बड़े पर्दे पर देखकर निर्णायक मण्डल में (मंज़र–उल वासै, अरविन्द तिवारी, डॉ. महेश आलोक एवं डॉ. चन्द्रवीर जैन) ने प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे छात्र–छात्राओं का चयन किया।

शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज की प्रेरणा से आयोजित इस प्रतियोगिता में चयनित छात्र–छात्राओं को ऑनलाइन प्रमाण पत्र दिए।

ई–कार्ड प्रदर्शन के माध्यम से सोशल मीडिया पर विद्यार्थियों को देश को हरा–भरा रखने व स्वच्छता सैनिक बनने का संदेश दिया गया।

प्रतिभागियों के वीडियो, बड़े पर्दे पर देखकर चयन प्रकिया को पूरा करते निर्णायक मण्डल के सदस्य।

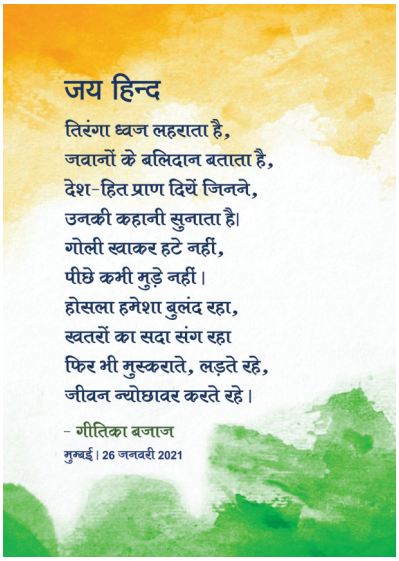

स्त्री-सशक्तिकरण

सांस्कृतिक कार्यक्रम

महिला सम्मान समारोह

- **कार्यक्रमः** महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला सम्मान समारोह
- **दिनांकः** 12 मार्च 2021
- **सम्मानः** डॉ. संगीता माथुर, ईशा आहूजा, संगीता शर्मा एवं नीतू सिंह
- **स्थानः** संस्कृति भवन, बजाज इले. लि. आवासीय परिसर, शिकोहाबाद, उ.प्र.

सम्मान पत्र प्राप्त करतीं डॉ. संगीता माथुर।

डॉ. रजनी यादव की अध्यक्षता में 'शब्दम्' द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, महिला सम्मान समारोह के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर कोविड काल के दौरान किए गए समाजसेवा से जुड़े कार्यों के लिए डॉ. संगीता माथुर, ईशा आहूजा, संगीता शर्मा एवं नीतू सिंह का सम्मान किया गया। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष किरण बजाज एवं गीतिका बजाज की मुम्बई से भेजी कविताओं को पढ़कर सुनाया गया।

इस अवसर डॉ. संगीता माथुर ने कहा कि महिलाओं के लिए सिर्फ स्वयं को स्वस्थ रखना नहीं बल्कि पूरे परिवार को स्वस्थ रखना अनिवार्य है।

ईशा आहूजा ने कोविड काल के दौरान विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा से जोड़ने के लिए अपने अनुभवों से सभागार को जोड़ा।

सम्मान पत्र प्राप्त करतीं डॉ. ईशा आहूजा।

सम्मान पत्र प्राप्त करतीं संगीता शर्मा।

सम्मान पत्र प्राप्त करती नीतू यादव।

संगीता शर्मा ने बताया उनके सामाजिक जीवन की शुरूआत ही शब्दम् के ग्रीष्मकालीन शिविर से हुई। इस कोविड काल में उन्होंने कई संस्थाओं के साथ मिलकर खाद्य सामग्री के पैकेट बाँटे।

नीतू यादव ने कहा कि उनका जीवन असहाय महिलाओं के लिए समर्पित है। अभी तक उनकी संस्था 32 हजार से अधिक महिलाओं को रोज़गार से जोड़ चुकी है।

डॉ. रजनी यादव ने कहा कि शब्दम् लगातार महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने का कार्य करता आया है और आगे भी करता रहेगा।

शब्दम संस्था ने महिलाओं को किया गया सम्मानित

'शब्दम' ने किया महिला सम्मान समारोह का आयोजन

सम्मानित समाज सेविका डॉ. संगीता माथुर, नीतू यादव, डॉ. ईशा आहूजा एवं संगीता शर्मा।

सभागार का दृश्य।

स्त्री-सशक्तिकरण

सांस्कृतिक कार्यक्रम

जानकीदेवी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र

शब्दम् सिलाई केन्द्र अपने प्रारम्भ काल से ही सिलाई कला की शिक्षा महिलाओं एवं बालिकाओं को देकर स्वावलम्बी बनाता आ रहा है। अभी तक 3 हज़ार से अधिक महिलाओं को इस रोज़गार परक कला के माध्यम से स्वावलम्बी बनाया।

पिछले दो वर्षों से कोविड संक्रमण के कारण अपने सिलाई केन्द्रों को नियमित संचालित नहीं कर पा रहा था। अतः इन विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए संस्था ने एक नवम्बर 2021 से अपने सभी सिलाई केन्द्रों को स्थायी तौर पर बंद किया। परन्तु शब्दम् के साथ जुड़ी शिक्षिकाओं को सिलाई मशीन व अन्य उपयोगी सामग्री अनुदान कर, उन्हें उनका स्वयं का सिलाई केन्द्र चलाने के लिए प्रेरित किया।

इसी क्रम में शब्दम् के साथ ग्रीष्म कालीन शिविर में छात्रा के रूप में जुड़ी संगीता शर्मा जो अब समाजसेवी भी हैं उन्हें भी कुछ सिलाई मशीनें अनुदान के रूप में दी गयीं व एक नया सिलाई केन्द्र खोलने के लिए प्रेरित किया गया।

शब्दम् का उद्देश्य है कि ये सभी शिक्षिकाएँ अपने स्तर पर अब बालिकाओं एवं महिलाओं को स्वावलम्बी बनाएँ।

शिक्षक सम्मान समारोह

- **कार्यक्रमः** शिक्षक सम्मान समारोह
- **दिनांकः** 5 सितम्बर 2021 • **सम्मानः** डॉ. सुबोध दुबे
- **स्थानः** दुबे कम्पाउण्ड, मैनपुरी

शब्दम् ने शिक्षक दिवस के अवसर पर डॉ. सुबोध दुबे का सम्मान उनके निज निवास मैनपुरी में जाकर किया। इस अवसर पर हरित कलश, बैजयन्ती माला, प्रशस्ति पत्र एवं प्रमाण पत्र उन्हें भेंट किया गया। शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य मंज़र–उल वासै, डॉ. रजनी यादव, अरविन्द तिवारी, डॉ. चन्द्रवीर जैन उपस्थित रहे।

डॉ. सुबोध दुबे ने सन् 2004 में शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के नेतृत्व में 'शब्दम' के कार्यों को सम्पादन किया। वे सन् 2007 तक शब्दम् से जुड़े रहे। इसके पश्चात् वे हिन्दलैम्प्स से अवकाश प्राप्त करने के साथ ही शारदा ग्रुप 'आगरा–मथुरा कैम्पस' में प्रोफेसर व डीन हो गए। वहां आपने इंजीनियरिंग मैनजमेंट, फार्मेसी आदि विभागों के छात्र–छात्राओं के चरित्र निर्माण सहित व्यक्तित्व विकास और भविष्य के रोजगार को ध्यान में रखकर विभाग बनाया जो हर सत्र के तथा हर वर्ग के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करता था। संस्कृति और प्रदर्शन कला विभाग की भी स्थापना की। आप शारदा ग्रुप में भी सांस्कृतिक और साहित्यिक आयोजनों के कर्ता–धर्ता बने रहे। सन् 2016–17 में संस्कृति विश्व विद्यालय में आप निदेशक बन गए और सभी प्रकार की गतिविधियों में अपना योगदान किया। सम्प्रति वे मैनुपरी में रहकर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं के सलाहकार एवं व्याख्याता के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने समाज के कल्याण हेतु ईसन फाउण्डेशन की स्थापना की है।

इस अवसर पर जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम

सम्मान पत्र के साथ डॉ. सुबोध दुबे।

शिक्षक दिवस पर शब्दम ने किया डॉ. सुबोध को सम्मानित

शिकोहाबाद (सच कहूं न्यूज)। शिक्षक दिवस पर शब्दम संस्था ने डॉ. सुबोध दुबे का सम्मान हरित कला, बैजयन्ती माला, प्रास्ति पत्र एवं प्रमाण पत्र के माध्यम से उनके निजी निवास पर जाकर किया। डॉ. सुबोध दुबे ने सन 2004 में शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज के नेतृत्व में शब्दम के कार्यों का शिकोहाबाद में सम्पादन किया। वह सन 2007 तक शब्दम से जुड़े रहे। इसके बाद आप हिन्दलैम्प्स से अवकाश प्राप्त करने के साथ ही शारदा ग्रुप आगरा-मथुरा कैम्पस प्रोफेसर व डीन हो गए।

सन 2016-17 में संस्कृति विव विद्यालय में आप निदेशक बन गए और सभी प्रकार की गतिविधियों में अपना योगदान दिया। जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम अध्यक्ष किरण बजाज ने कहा कि डॉ. सुबोध दुबे में सीखने एवं सिखाने के दोनों गुण विद्दमान हैं। एक अच्छा शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता है।

जूम मीटिंग के माध्यम से ही मुम्बई से प्रोफेसर नंदलाल पाठक, लखनऊ से उदयप्रताप सिंह, गुड़गांव से मुकुल उपाध्याय, एटा से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, से डॉ. महेस आलोक एवं डॉ. अजय कुमार आहूजा तथा न्यूजीलैण्ड से सुदीप्ता व्यास, मंजर-उल वासै, डॉ. रजनी यादव, अरविन्द तिवारी, डॉ. चन्द्रवीर जैन, कुसुम दुबे, मनोज दुबे, प्रमोद दुबे मौजूद रहे।

इस अवसर पर जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने अपने संदेश में कहा कि डॉ. सुबोध दुबे में सीखने एवं सिखाने के दोनों गुण विद्यमान हैं। एक अच्छा शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता है। शब्दम् अध्यक्ष ने कहा कि मैं आशा करती हूँ कि आप सदैव अच्छे शिक्षक के रूप में कार्य करते रहेंगे।

जूम मीटिंग के माध्यम से ही मुम्बई से प्रोफेसर नंदलाल पाठक, लखनऊ से उदयप्रताप सिंह, गुड़गांव से मुकुल उपाध्याय, एटा से डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, शिकोहाबाद से डॉ. अजय कुमार आहूजा एवं न्यूज़ीलैण्ड से सुदीप्ता व्यास उपस्थित रहीं।

शिक्षक दिवस के अवसर पर ईकार्ड के माध्यम से सोशल मीडिया पर जुड़े शब्दम् के साथियों व शिक्षकों को प्रशिक्षण के साथ–साथ विद्यार्थियों को अच्छे संस्कार देने के लिए जागरूक किया गया।

डॉ. सुबोध दुबे को सम्मानित करते हुए शब्दम् सलाहकार मण्ड़ल के सदस्य।

शब्दम् ने किया डा सुबोध दुबे का सम्मान

शिकोहाबाद। शिक्षक दिवस पर शब्दम् संस्था ने डा सुबोध दुबे का सम्मान किया। शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज के नेतृत्व में शब्दम् के कार्यो का शिकोहाबाद में सम्पादन किया। जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम् अध्यक्ष किरण बजाज ने कहा कि डा दुबे में सीखने एवं सिखाने के दोनों गुण विद्धमान हैं। एक अच्छा शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता है। शब्दम् अध्यक्ष ने कहा आप सदैव अच्छे शिक्षक के रूप में कार्य करते रहेंगे। मुम्बई से प्रोफेसर नंदलाल पाठक, लखनऊ से उदयप्रताप सिंह, गुड़गांव से मुकुल उपाध्याय, एटा से डा ध्रुवेन्द्र भदौरिया, शिकोहाबाद से डा महेश आलोक एवं डा अजय कुमार आहूजा तथा न्यूजीलैण्ड से सुदीप्ता व्यास उपस्थित रहीं। शब्दम् सलाहकार समिति के वरिष्ठ सदस्य मंजर-उल वासै, डा रजनी यादव, अरविन्द तिवारी, डा चन्द्रवीर जैन उपस्थित रहे। संचालन दीपक औहरी ने किया।

प्रश्नमंच

शब्दम् हिन्दी प्रश्नमंच कार्यक्रम विद्यालय एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य उनमें हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रति जिज्ञासा, विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा के शब्दों के उच्चारण, शुद्धता एवं हिन्दी के बृहत् ज्ञान के प्रति उत्सुकता पैदा करना है। यह संस्था के वार्षिक अनवरत कार्यक्रमों में से एक है। इस वर्ष कोराना महामारी के चलते प्रश्नमंच का आयोजन जनपद के कुछ ही विद्यालयों में किया जा सका है।

कुल भूषण आर्य इण्टर कॉलेज में आयोजित प्रश्नमंच कार्यक्रम की झलकियां।

इकरा एजूकेशनल इस्टीट्यूट मक्खनपुर नवादा में आयोजित प्रश्नमंच कार्यक्रम की झलकियां।

THE ANANT BAJAJ FOUNDATION | Spic Macay

अनन्त बजाज फाउंडेशन के तत्वावधान में, भारतीय कलाओं और संस्कृति की उन्नति के लिए शब्दम् और स्पिक मैके का गठबंधन।

कई वर्षों से शब्दम् के संरक्षक एवं सदस्यगण स्पिक मैके द्वारा प्रस्तुत किये गये सांस्कृतिक कार्यक्रमों से परिचित ही नहीं, वरन् सहभागी रहे हैं। दर्शक और श्रोतागण भी इन कार्यक्रमों से आनंद की अनुभूति करते रहे हैं।

हमें यह घोषित करते हुए हर्ष हो रहा है कि स्पिक मैके और अनंत बजाज फाउंडेशन पारस्परिक सहयोग करेंगे जिससे फाउंडेशन की प्रगति हो सके। यह दूरगामी संबंधों का कदम देश–विदेश के नगरों, कस्बों और गहन ग्रामीण क्षेत्रों में भारतीय कला और संस्कृति को विस्तृत रूप से फैलाने के उद्देश्य से उठाया गया है।

स्पिक मैके का उद्देश्य औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त नयी पीढ़ी को भारतीय पारंपरिक कला और संस्कृति से जोड़ना और उनके मन में इनके प्रति आकर्षण उत्पन्न करना है।

यह (स्पिक मैके) भारतीय और वैश्विक, विस्मृत सी कलाओं और संस्कृति की प्राचीन उपलब्धियों का पुनरुत्थान कर, उनसे युवाओं को जोड़कर बेहतर मनुष्य बनाने के लिए प्रयत्नशील है।

प्रति वर्ष लगभग 1000 नगरों में 5000 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। अनंत बजाज फाउंडेशन से मिलकर स्पिक मैके अपने सिद्धहस्त कलाकारों द्वारा कार्यक्रमों की एक बृहत् शृंखला प्रायोजित करेगी। इन कार्यक्रमों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, सामूहिक कृत्य, चित्रपट, कविता, नाटक, पारम्परिक चित्रकारी, योग आदि सम्मिलित होंगे।

ये कार्यक्रम सुविधा और परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए भाषणों, अधिवेशनों, वार्तालाप आदि के रूप में, साक्षात् या ऑनलाइन प्रदर्शित किये जाएँगे ।

अनंत बजाज भारतीय कलाओं और संस्कृति के पक्षधर थे। शैशवास्था, किशोरावस्था से ही उन्होंने अपने को ललित कलाओं, खेल–कूद के साथ ही वसुधैव कुटुंबकम् की स्थितियों और वातावरण से चतुर्दिक रूप से आवृत पाया। जब सारा व्यापार–तंत्र आर्थिक लाभ पर केंद्रित था, वे औद्योगिक जगत् और संगीत और ललित कलाओं की दुनिया के सहगामी होने का दिवा–स्वप्न देख रहे थे।

इसीके परिणाम स्वरूप BEAMS का जन्म हुआ है ।

BEAMS = BAJAJ ENTERTAINMENT ARTS, MUSIC & SPORTS - व्यापारिक सभाओं और गोष्ठियों में भी अनंत उच्चकोटि के सिद्धहस्त कलाकारों को आमंत्रित कर स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया करते थे।

अनंत की विशेष रुचि भारतीय आदिवासियों के संगीत––विशेष रूप से नृत्य में थी। अनंत बजाज फाउंडेशन और स्पिक मैके मिलकर उच्चकोटि के भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक नयी ऊर्जा और गति प्रदान करने में सफल होंगे––ऐसा हमारा विश्वास है ।

स्पिक मैके के संस्थापक डॉ. किरण सेठ का कहना है कि स्पिक मैके, बजाज इलेक्ट्रीकल्स, किरण और शेखर बजाज का, उनके हार्दिक और आत्मीय सहयोग के लिए आभारी है और यह कि हमें अनंत बजाज फाउंडेशन के सहगामी बनने का सौभाग्य प्राप्त होने जा रहा है ।

भारतीय चेतना...

- डॉ. ध्रुवेंद्र भदौरिया

भारतीय चेतना समस्त विश्व को ..आत्मा के रूप में प्रारंभ से ही देखती रही है ...हमने भूखंड विजय करके संतोष नहीं किया!

जो ब्रह्मांड में है वही पिंड में है! हमारी दर्शनदृष्टि में इन्द्रियों की अंतःकरण सहित विजय ही वास्तविक विश्व विजय है. सम्पूर्ण विश्व इस देह में ही स्थित है ....जो इस विजय यात्रा पर निकल जाता है वही महावीर है!.... बुद्धिमान भी वही है –भारतीय मनीषा उसे ही बुद्ध कहकर सम्बोधित करती है।

भूखंडों पर अधिकार करके जन समूह को पराधीन बनाना भारतीय चिन्तन को कभी अभीष्ट नहीं रहा. भारत के मनीषियों ने ह्रदयों पर शासन किया, प्रेम के साम्राज्य स्थापित किये, और सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाने के संकल्पों का उद्घोष किया–कृण्वन्तु विश्वार्यम् ...का वैदिक जयघोष विश्व विजय का ही तो जय घोष है!

हमने विश्व को शत्रु कभी नहीं समझा, विश्व तो हमारा परिवार है –वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा केवल भारत की देन है, यही कारण है कि हम विश्व पर बल प्रयोग द्वारा विजय प्राप्त नहीं करते... उसे परिवार की तरह मानकर प्रेम से जीत लेते हैं, विश्व कल्याण के लिए ऋषियों ने देह को तपाया, चेतना को तपाया और जो आत्म ज्ञान प्राप्त किया उसे करुणा वश विश्व को प्रसाद स्वरूप बाँट दिया!.....सत्य अहिंसा के सूत्र संसार को सहज ही ऋषि कृपा से मिल गए!.... सत्यम वद, धर्मम् चर! कहकर भारतीय मनीषा विश्व को गुरुवत् मार्गदर्शन दे रही है..... गुरु कभी अपने शिष्य को जीतना नहीं चाहेगा, उसे तो उस से हार कर जो सुख मिलेगा, वह जीत से अधिक होगा!

वाल्मीकि रामायण में युद्ध सर्ग का प्रसंग है– रावण वध के उपरान्त रावण का शव रणभूमि में पड़ा है, रावण के वंश में विभीषण को छोड़कर कोई नहीं बचा जो दाह संस्कार कर सके, किन्तु विभीषण संकुचित हैं, यदि मैं दाह संस्कार करता हूँ जो श्री राम क्या सोचेंगे, श्री राम भारतीय चेतना के शिखर हैं वे मित्र के संकोच को समझ कर बोलते है –'महात्मा बल सम्पन्नो रावणों लोक रावण।

मरणांन्तानि वैरानि निवृतम् नःप्रयोजनम।। –अर्थात विभीषन आप संकोच मत कीजिए, रावण महात्मा था वह बलसंपन्न भी था ,उसकी मृत्यु के साथ ही उस से मेरा बैर भी समाप्त हो गया है। अब वह जैसे तुम्हारा भाई है, वैसे ही मेरा भी भाई है, अतः आओ हम दोनों भाई अपने इस रावण भाई का अंतिम संस्कार करें .!....आत्म विजयी श्री राम ने लंका वासियों का दिल जीत लिया और लंका में राम राज्य स्थापित हो गया!

भारतीय चेतना के सर्वोच्च शिखर के रूप में जब स्वामी विवेकानंद जी शिकागो के धर्म सम्मलेन के मंच से –मेरे भाई और बहनों के संबोधन से जब अमेरिका के लोगों को पुकार रहे थे, तो उनकी वाणी में–वसुधैव कुटुम्बकम–के स्वर ही तो मुखरित थे, यही भारतीय मनीषा की विश्व विजय का प्रेम भरा शंख नाद था! जो आत्म दर्शन और इन्द्रिय विजय का उद्घोष था।

भारत ने विश्व विजय के लिए सैनिकों को नही भेजा संन्यासी को भेजा था! और वह आत्मविजयी संत विश्व विजयी होकर ही लौटा, अपनी भारत माँ के चरणों में विनम्र भाव से!

यही भारत का विश्व विजय का दर्शन है जो आत्म विजय का दर्शन है!

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित शब्दम्

साहित्यिक कार्यक्रम

शब्दम् 17वां स्थापना दिवस समारोह

दिनांक- 17 नवंबर 2021

गणेश पूजन एवं सरस्वती वंदना के साथ शब्दम् 17वें स्थापना दिवस का शुभारम्भ किया गया।

इस अवसर पर शब्दम् ने अपने 17 वर्षों की गतिविधियों को वीडियो के माध्यम से सोशल मीडिया से जुड़े सदस्यों व साहित्यकारों के मध्य प्रदर्शित किया। जूम मीटिंग के माध्यम से शब्दम् न्यासी एवं सलाहकार समिति के सदस्यों ने शब्दम् अध्यक्ष के मध्य आगे की कार्य योजनाओं पर चर्चा हुई। इस स्थापना दिवस के अवसर पर कु. गीतिका बजाज द्वारा लिखी गयी कविता का सोशल मीडिया पर प्रसारण किया गया।

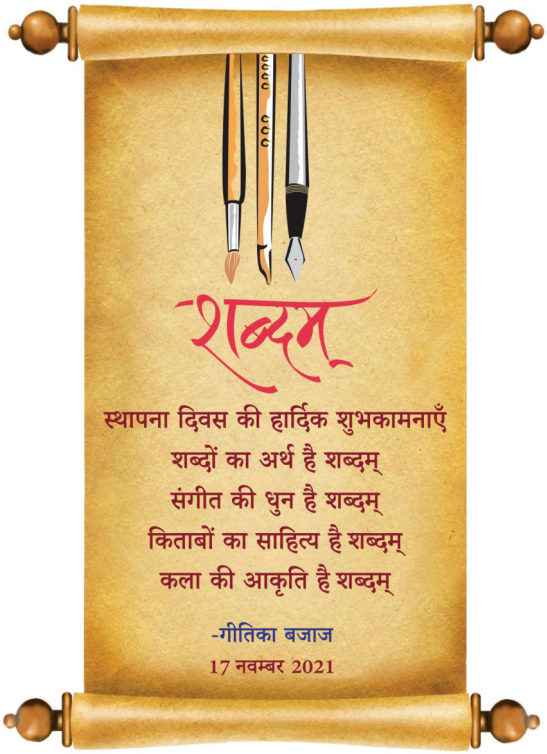

शब्दम् – 17 वर्षों की गतिविधियों के वीडियो की कुछ झलकियाँ।

● **कार्यक्रम** : वसंत काव्य गोष्ठी ● **दिनांक** : – 23 फरवरी 2021

● **आमंत्रित कविगण** : श्री कृपाशंकर शर्मा 'शूल', श्री रवीन्द्र रंजन, डॉ. मुकेश मणिकांचन, डॉ. महेश आलोक, श्री अरविन्द तिवारी, डॉ. चन्द्रवीर जैन ● **स्थान** : बजाज इलेक्ट्रिकल्स आवासीय परिसर, शिकोहाबाद, (उ.प्र.)

शब्दम् संस्था द्वारा वसंत काव्य गोष्ठी का आयोजन

वसंत पर्व के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था द्वारा काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी का प्रारम्भ कवि मुकेश मणिकांचन द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ तत्पश्चात् संस्था अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा मुम्बई से भेजी गई रिकार्डिड कविता सुनाई गयी।

कवि रवीन्द्र रंजन, डॉ. चन्द्रवीर जैन, डॉ. महेश आलोक ने अपनी कविताओं की मादकता से सभागार को वसंती किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि कृपा शंकर शर्मा 'शूल' व संचालन व्यंग्यकार अरविन्द तिवारी ने किया। कार्यक्रम में अनिल बेधड़क, डॉ. दीवान सिंह, ग्रीश फलक, शिवरतन सिंह, अशोक कुमार शर्मा, रमेश चन्द्र गुप्ता, आर.एन. यादव, उदयवीर शर्मा, आर.के. बंसल, नवीन मिश्रा, राजेन्द्र सिंह, आलोक अर्श, रत्नेश कुलश्रेष्ठ, कीर्ति कुलश्रेष्ठ, डॉ. टी.एन. यादव, अनिल पालीवाल, आदि उपस्थित रहे।

वसंत पर्व के उपलक्ष्य में शब्दम् संस्था ने किया काव्य गोष्ठी का आयोजन

शब्दम् संस्था द्वारा वसंत काव्य गोष्ठी का आयोजन

वसंत काव्य गोष्ठी मंच का दृश्य।

मैंने मावस को पूनम का चाँद देखा है, कैसे कह दूँ की पावस की रात अँधेरी होती है....
- कवि डॉ. चन्द्रवीर जैन

प्यार भरे तेरे सम्बोधन मैंने गीत गोविंद लिखा....
- कवि गीतकार रविन्द्र रंजन

फूल वाले दिनों की कसम है तुम्हें, अपनी खुशबू से पथ को बुहारा करो.....
- कवि डॉ. महेश आलोक

फागुनी हो यामिनी और कोई कामिनी, रूप का जब दंभ छोड़े...
- व्यंग्यकार अरविन्द तिवारी

कविता प्रस्तुत करते कृपाशंकर शर्मा 'शूल'।

कविता प्रस्तुत करते मुकेश मणिकांचन।

गीत प्रस्तुत करते गीतकार रविन्द्र रंजन।

वसंत काव्य गोष्ठी सभागार का दृश्य।

प्रो. नंदलाल पाठक

यहाँ हर एक को है अपने अपने प्यार की चिन्ता।
कभी संसार ने की ही नहीं संसार की चिन्ता।।

हँसी आती है होठों तक मगर ज्यादा नहीं टिकती,
बहा देती है उसको आँसुओं की धार की चिन्ता।

ये क्या जनतंत्र है जो कैद है नेता की मुट्ठी में,
जिसे है देश से ज्यादा कहीं परिवार की चिन्ता।

वो अपने मन की मालिक है वो अपने तन की मालिक है
अहल्या आज की करती नहीं उद्धार की चिन्ता।

ये कुंभन दास के वंशज ये तुलसीदास के बेटे,
हृदय सम्राट हैं खुद, क्या इन्हें दरबार की चिन्ता।

नरक या स्वर्ग दोनों आदमी के कारनामें हैं,
यहीं मिल जाएंगे दोनों, न कर उस पार की चिन्ता।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित शब्दम्

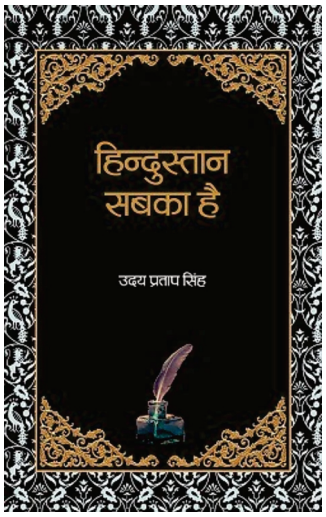

साहित्यिक कार्यक्रम

"हिंदुस्तान सबका है"

– उदय प्रताप सिंह

उदय प्रताप सिंह की काव्य यात्रा पिछले 75 वर्षों से लगातार चल रही है। वह मंचीय कविता के पुरोधा एवं अग्रणी कवि रहे हैं। भाषा और छंद पर बहुत सुंदर अधिकार रखने वाले उदय प्रताप सिंह ने पुराने जमाने में राष्ट्रकवि दिनकर के साथ काव्य मंच साझा किया है और इस जमाने के कवि कुमार विश्वास के भी साथ भी उपस्थित रहे हैं। वो उस जमाने के कवि हैं जब कविता जनता से दूर नहीं गयी थी। कवियों का अपने समाज से जीवंत संबंध था और काव्य सम्मेलनों के मंच पर कवि अपने जमाने की जनभावनाओं को मुखरता से अभिव्यक्त करते थे। कवि सम्मेलन तो आज भी होते ही रहते हैं लेकिन गंभीर कविताओं के दिन लद गए। ऐसे समय में कवि उदय प्रताप सिंह की यह कविता पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसमें पुराने वक्त की बेहतरीन गूंजें कविताओं और ग़ज़लों के साथ ही दर्ज हैं और इस बात का भी इशारा करती हैं कि कवि की रचनात्मकता अभी चुकी नहीं है और उसका तेवर मद्धिम नहीं पड़ा है। "हिंदुस्तान सबका है" न केवल एक पठनीय काव्यसंग्रह है बल्कि वह संग्रह में संकलित इसी नाम की एक कविता से उठायी गयी पंक्ति है जो आज के राजनीतिक नैरेटिव के प्रचलित कंटकाकीर्ण पथ के सापेक्ष कविता का जनपथ संभव करती है। उदय प्रताप सिंह की कविता का प्रधान स्वर आजादी के बाद मोहभंग का ही है। वहीं से उठान लेकर इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक तक इनकी कविता का पाट फैला हुआ है जो विस्मयकारक है। ग़ज़लों का रचाव उदयप्रताप जी की आधुनिक जीवन की तकनीकी संवेदना से निर्मित हुआ है जिसका परिचय इस संग्रह में संकलित ग़ज़लों से मिलता है।

''लिफाफे में कविता''

- अरविंद तिवारी

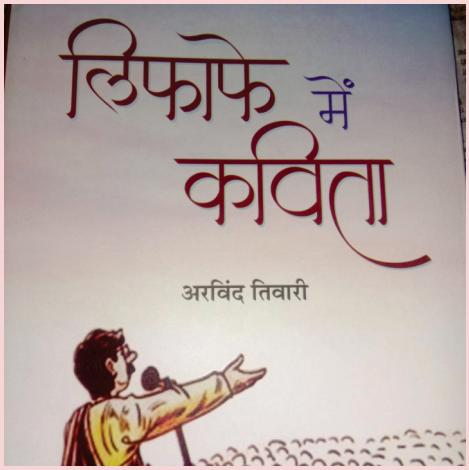

वर्ष 2021 में शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य और देश के लब्धप्रतिष्ठ व्यंग्यकार अरविंद तिवारी की तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं पर इनमें सबसे चर्चित हो रही पुस्तक है, ''लिफाफे में कविता।'' यह एक व्यंग्य उपन्यास है जो कवि सम्मेलनों की विसंगतियों पर लिखा गया है। प्रभात प्रकाशन के संस्थान प्रतिभा प्रतिष्ठान नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में उपन्यास का नायक जोड़ तोड़ से मंच का प्रसिद्ध कवि तो बन जाता है पर धनलिप्सा और वासना के समुद्र में ऐसा डूबता है कि अंत में खाली हाथ अपने पुश्तैनी कस्बे में लौट आता है। व्यंग्य वाक्यों और पंचों से लबरेज यह उपन्यास बिक्री के रिकॉर्ड तोड रहा है।

एक गीत बेटियों के नाम

खुशियों से लबरेज हर परिवार रहेगा
बेटियाँ होंगी तो घर गुलजार रहेगा
आंगन में कूकती हैं कोयल सी बेटियाँ
मन की खूब साफ हैं कोमल सी बेटियाँ
मां बाप के हरती सभी संताप बेटियाँ
रहती नहीं कभी भी चुपचाप बेटियाँ
बेटियाँ होंगी तो ये संसार रहेगा
बेटियाँ होंगी तो घर गुलजार रहेगा
मांगती उड़ान का आकाश बेटियाँ
शिक्षा और ज्ञान का प्रकाश बेटियाँ
आजाद करो पिंजरे से कहती बेटियाँ
अपमान भरी बोलियां सहती बेटियाँ
संघर्ष में यह ज्ञान ही हथियार रहेगा
बेटियाँ होंगी तो घर गुलजार रहेगा
कोख में मारोगे तो चीखेंगी बेटियाँ
फिर गांव में ना शहर में दीखेंगी बेटियाँ
सृष्टि की रचना का हैं आधार बेटियाँ
बिन मौत ही मरती हैं लाचार बेटियाँ
बेटी बिना न कोई त्यौहार रहेगा
बेटियाँ होंगी तो घर गुलजार रहेगा

-अरविंद तिवारी

''लिखना कविता का''
- डॉ. सुबोध दुबे

कार्तिक पूर्णिमा, सन् 2017 में सम्भावना प्रकाशन, हापुड़–245101 से प्रकाशित।

''चाहे गीत–कविता हो अथवा गद्य–कविता इस मोहपाश में हर कोई नहीं बंध पाता, ऐसा हो पाना सब के भाग्य में भी संभव नहीं होता। सारस्वत संस्कारों के पुण्यफल के रूप में ही बिरलों के अंतर्मन में इसकी अभिरुचि जाग्रत होती है। मन के अँधियारों में मानो एक दीपक–सा जल उठता है, जिसकी पवित्र दीप्ति की अनुभूति मात्र उस व्यक्ति विशेष को ही नहीं होती, अपितु उसके आसपास के लोगों की राहें भी उस दिव्य प्रकाश में नहीं उठती हैं। सौम्य व्यक्तित्व वाले कविवर सुबोध दुबे के भीतर के कवि की विरलतम अभिव्यक्ति मेरी दृष्टि में विलक्षण है। उनकी रचना 'लिखना कविता का', जो संकलन की प्रथम कविता है, से लेकर संग्रह की अंतिम रचना 'फिर उभरूँगा' तक, सभी इसकी साक्षी हैं तथा प्राणों को मथ–मथ देती हैं। मेरा मन उनकी सारी कविताओं की छुअन से अभी तक उद्वेलित है।''

– कीर्तिशेष सुप्रसिद्ध कवि किशन सरोज का वक्तव्य

मैं अभी चुका नहीं हूँ
- डॉ. सुबोध दुबे

मैं अभी चुका नहीं हूँ
चुकती सी लगती है देह
शरीर की सुनूँगा नहीं मैं
फिर घूमूँगा घिरते, बरसते बादलों में
हरी बिछी घास पर चलूँगा तेज-तेज।

तुतलाऊँगा शैशव के साथ-साथ
भागूँगा इन्द्रधनुष के पीछे,
पकड़ूँगा जुगनू को
फिर निहारूँगा उगते चाँद को, ढलते सूरज को
दोहराऊँगा बार-बार बीत गयी मीठी यादें।
खिलखिला कर फिर हँसूगा
बिसरा दिये गये सुरमई क्षणों पर
मनाऊँगा रूठे फूल को, भूले मित्र को
गाऊँगा हवा के साथ
फिर देकर किसी के हाथ में अपना हाथ
चुका नहीं हूँ मैं,
मैं नहीं चुका हूँ।

कैसे चुक जाऊँ?
अभी भी लुभाती है वृक्ष के तने पर
चढ़ती-उतरती गिलहरी,
उड़ते-उड़ते ही फूलों से
रस चूस लेती काली चमकीली चिड़िया,
गोपन डाक बाँटती बहुरंगी तितलियाँ
चुई-चुई, टिर्र-टिर्र अबूझी बोलियाँ
रस घोलती पंखों पर तैरती टोलियाँ।

विस्मृत कर दूँगा
शाख से गिरते पीले जर्जर पात को
अख़बारी, बासी ख़बरों को
घर-दीवार पर फैल गयी काली सीलन को।
फिर जलाऊँगा गन्धित बत्तियाँ
तैरते वलयों के साथ
सुवासित फिर करूँगा मन को।
लिखूँगा, रचूँगा सफेद उजले पन्नों
पर श्यामल-स्निग्ध आखर

जो कभी चुकेंगे नहीं
कानों से फुसफसायेंगे
तुम कैसे चुक सकते हो?

अभी तो बाकी है
मनियारी साँझ की दिया-बाती
उष्मित तरलता की चाहत
छुअनों की सांत्वना।

फिर सहेजना है, नयन कोरों के जल को
मनाना है बिफर गये यौवन को।
पथ पार कराना है लड़खड़ाती लाठी को
सिरहाने बैठ, सहलाते माथे के साथ
सुनानी है किसी को राम कथा
टाँक देना है पुष्प किसी केशों के प्रतिबिम्ब में
चुप-चुप गुनना है
मन ही मन बुनना है
रिश्तों की बेलबूटे, कढ़ाईदार जालियाँ
सपनों की अनगिन वीथियाँ।

चुक जाने के बाद भी नहीं चुकूँगा
निकल पड़ूँगा
असंख्य मन्वंतरों के असंख्य लोकों की
दक्षिणायन मासों, उत्तरायन दिवसों की
सुकर्मा देवत्व भरी यात्राओं पर
देव पथों पर
देवयानों पर
पितरों के साथ-साथ
पर चुकने के बाद
अभी तो मैं चुका नहीं हूँ।
चलने की चिरन्तन यात्राएँ
चुकने देंगी नहीं मुझे
चुकूँगा भी कैसे
चुकती लगती सी है देह,
मानूँगा मन की
चुक सकता नहीं मैं अभी चुका नहीं हूँ।

कोरोना काल की कविताएँ
- महेश आलोक

महेश आलोक समकालीन हिन्दी कविता के प्रतिष्ठित कवि हैं। नब्बे के दशक में जिन युवा कवियों ने अपने टटकेपन और नई सर्जनात्मक खुशबू से समकालीन हिन्दी कविता में अपनी जोरदार उपस्थिति दर्ज की,उनमें महेश आलोक प्रमुख हैं। यही कारण है कि मूर्धन्य कवि केदारनाथ सिंह ने नब्बे के दशक में जब बहुचर्चित काव्य संग्रह 'कविता दशक' का सम्पादन किया तो महेश आलोक को इस संग्रह में सबसे अधिक प्रतिभाशाली युवा कवि के रूप में संकलित किया।

महेश आलोक की कोरोना काल की कविताएँ अपनी गहरी संवेदना, काव्य–भाषा और शिल्प में अनूठे नए प्रयोग और बिल्कुल नए मुहावरे के कारण खूब चर्चित रही हैं। इनमें से कुछ कविताओं का अँग्रेजी अनुवाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खूब सराहा गया है। महेश आलोक की कविताओं का लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनके दूसरे काव्य संग्रह ' छाया का समुद्र' का मराठी अनुवाद शीघ्र प्रकाशित होने वाला है। नया काव्य संग्रह 'पत्थर–राग' प्रकाशनाधीन है। महेश आलोक को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान का 'विश्वविद्यालयी सम्मान', प्रतिष्ठित 'शब्द साधक कविता सम्मान' सहित कई सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

तालाबन्दी- १

चन्द्रमा जाने कैसे
उस घोसले पर अटक गया
जहाँ चिड़िया के बच्चे भूख से
रो रहे थे

सुबह दाना-पानी के लिए गई चिड़िया
तालाबन्दी की वजह से
लौट ही नहीं पाई थी अपने घर

चन्द्रमा को बहुत अच्छा लगा
जब बच्चे उसे फल समझकर
कुतरने लगे

तालाबन्दी-२

एक मजदूर ने मजदूरों के शोषण पर
लिखीं तमाम कविताएं
उसने रोटी पर कविताएं लिखीं
लिखीं भूख पर

अब वह लौट रहा है अपने गाँव
भूखे -प्यासे अपनी कविताओं को
जतन से संभाले हुए

वह सन्न रह गया यह देखकर
कि इन कविताओं के बदले दुकान से
उसे नहीं मिला
एक वक्त का भोजन

हालाँकि उसमें इतनी हिम्मत बची है
कि वह चन्द्रमा और सड़क को अपने
आँसुओं से कुचलते हुए
कविताओं की कीमत पर
लिख सके कविताएं

तालाबन्दी-३

वह कठिन क्षण था जब चिड़िया ने मेरे हाथ से
दाना खाने से मना कर दिया
वह मुझे दो फीट दूर रहने की
सलाह दे रही थी

सच कहूँ मैने पहली बार जाना कि मृत्यु का भय
प्रेम को भी लील लेता है

जमनालाल बजाज पुरस्कार 2021 द्वारा गांधीवादी 'योद्धाओं' का सम्मान

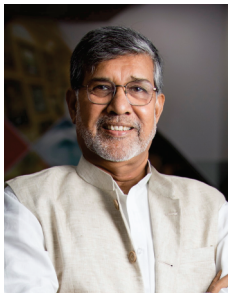

मुख्य अतिथि,
नोबल शांति पुरस्कार विजेता
श्री कैलाश सत्यार्थी

कोविड महामारी के कारण जमनालाल बजाज प्रतिष्ठान के 'जमनालाल बजाज–2021 पुरस्कार' एक 'ऑनलाइन' समारोह में प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि थे सुप्रसिद्ध समाज सुधारक, नोबल शांति पुरस्कार विजेता, 'बचपन बचाओं' आंदोलन के जनक व 'कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन्स फाउंडेशन' के संस्थापक श्री कैलाश सत्यार्थी। अपने सम्बोधन में श्री सत्यार्थी ने कहा, ''यह केवल एक पुरस्कार नहीं, एक परंपरा है। बेहतर दुनिया बनाने के लिए चार चीजें जरूरी है। पहली कि जिस तरह से उत्पाद का वैश्वीकरण हुआ है उस तरह करुणा का भी वैश्वीकरण हो। दूसरी, कि हमारे पास जिम्मेदारी तय करने का एक तंत्र होना चाहिए। तीसरी, कि विविधता की ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो एक समावेशी सामाजिक संरचना के पक्ष में हो। चौथी, कि हमें कुशलता की आपूर्ति की भी कड़ी बनानी चाहिये क्योंकि केवल प्रतिभा ही हमें वो नहीं बनाती है जो हम हैं।

इसके पूर्व प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री राहुल बजाज ने अपने स्वागत भाषण में कहा, ''मराठी में एक कहावत है– बघता काय, सामिल व्हा यानि कि अलग खड़े क्या देख रहे हो, जुड़ जाओ यही बात मैं देश की सम्पन्न बिरादरी से कहना चाहूंगा, हमें इन पुरस्कार विजेताओं के कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिये ।

रचनात्मक कार्य के लिए पुरस्कार

धर्मपाल सैनी
छत्तीसगढ़

ग्राम विकास हेतु विज्ञान और टेक्नोलॉजी के लिए पुरस्कार

डॉ. लाल सिंह
हिमाचल प्रदेश

महिला और बाल विकास एवं कल्याण के लिए पुरस्कार

सिस्टर लुसी कुरियन
महाराष्ट्र

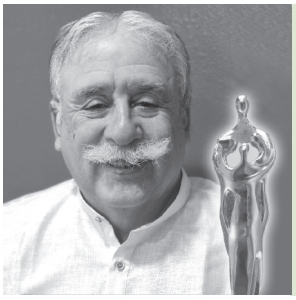

विदेशों में गांधीवादी मूल्यों के प्रसार के लिए अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार

डेविड एच. अल्बर्ट
अमेरिका

-सुश्री दुर्गा मल्लू गुडीलु

सुश्री दुर्गा मल्लू गुडीलू 'अनुम फाउंडेशन' के ट्रस्टियों मे से एक हैं और वे वैदू समुदाय के 3 लाख से अधिक लोगों की सरपंच और एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं।

उनका जन्म मुंबई के जोगेश्वरी पूर्व में संजय नगर नामक एक झुग्गी बस्ती में हुआ था और वे वहीं पर पली–बढ़ी थीं। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत जर्जर थी और इसके कारण उन्हें अपने पूरे परिवार के साथ भोजन और अन्य आवश्यक चीज़ों के लिए दर–दर भटकना पड़ता था। उन्हें भी माँगनी पड़ती थी, कूड़ेदानों में खारा ढूँढना पड़ता था और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कंस्ट्रक्शन साइटों पर दिहाड़ी मजदूर के तौर पर काम करना पड़ता था। उनका बचपन बड़ी ही दुखदायी परिस्थितियों में बीता, जिस समय उनके हाथों में किताबों, कलम और पढ़ाई की चीजें होनी चाहिए थी, उस समय उनके हाथों में भीख माँगने का कटोरा होता था।

दुर्गा एक ख़ानाबदोश आदिवासी वैदू समाज से हैं जहाँ साक्षरता दर बेहद कम है और इस समुदाय में महिलाओं के साथ बड़ा हीन व्यवहार किया जाता है। दुर्गा को यह एहसास हुआ कि अगर इस तरह के अन्याय के विरुद्ध लड़ना है और स्वयं को सशक्त बनाना है, तो इसके लिए शिक्षा बहुत ही ज़रूरी है, उसने पढ़ाई के साथ ही अपने समाज के लिए काम करना भी शुरू कर दिया। वैदू समुदाय के इतिहास में दुर्गा शिक्षा प्राप्त करने वाली पहली महिला थीं।

आज दुर्गा वैदू समुदाय की नेता हैं, वे 'अनम फाउंडेशन' नामक एक एनजीओ की संस्थापक सदस्य हैं जो खाराबदोश लोगों के लिए उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यारण और रोजगार के लिए कार्यरत है। वर्ष 2015 में दुर्गा और उसके जैसे कुछ उत्साही व्यक्तियों ने 'महाराष्ट्र वैदू विकास समिति' नामक एक समिति की स्थापना की जो शिक्षा पर जोर देने के साथ समुदाय के लिए शिक्षा, पोषण और महिला सशक्तिकरण जैसी विभिन्न विकास परियोजनाओं पर केंद्रित है, वे वर्तमान में इस समिति की अध्यक्ष हैं और इस पद को सँभालने वाली पहली महिला हैं।

दुर्गा ने वर्ष 2018 में 'लक्ष्मी कैटरर' नाम से कैटरिंग का एक छोटा सा व्यवसाय शुरू किया, जिसमें 200 से अधिक महिलाएँ रोटियाँ बनाकर होटलों और अन्य लोगों को पहुँचाती हैं और इस तरह से उन्हें इस संस्था के माध्यम से अपनी आजीविका चलाने का साधन मिला है।

कोविड–19 महामारी के प्रकोप और देश भर में लगे अभूतपूर्व लॉकडाउन ने आर्थिक गतिविधियों को लगभग रोक ही दिया था और इससे वैदू समुदाय के लोगों के जीवन और आजीविका पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, क्योंकि इस समुदाय में अधिकांश लोग दिहाड़ी मजदूरों, हाउस हेल्परों, फेरीवालों और हाथ से मैला ढोने वालों के रूप में काम करते थे। भोजन व पैसा नहीं मिलने, पढ़ाई–लिखाई बंद होने और सेहत पर बुरा असर पड़ने के कारण इस समुदाय के मुश्किल हालात और भी मुश्किल हो गए।

दुर्गा ने सख्त ज़रूरत के उस वक्त में कड़ी मेहनत की और पैसे जुटाकर 10,000 परिवारों को भोजन और राशन उपलब्ध करवाया, साथ ही 15,000 से अधिक संवेदनशील लड़कियों को सैनिटिरी नैप्किन भी मुहैया करवाए, महामारी के दौरान उन्होंने 'मेरा सपना' की शुरूआत की, जो लगभग 450 बच्चों के लिए एक ओपन स्टडी सर्कल था। इसक उद्देश्य बच्चों को बुनियादी शिक्षा उपलब्ध कराना और उनके समग्र मानसिक व शारीरिक कल्याण के लिए काम करना भी था। दवाईयों और अन्य जरूरी सामग्री वितरित करने के अलावा उनकी संस्था ने 20,000 बच्चों को मध्याह्न भोजन भी वितरित किया, ताकि वे अपनी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

उनके कामकाज से जुड़ी कहानी सचमुच प्रेरणा प्रद है, वे एक ऐसे समुदाय की सदस्य थीं, जो समाज में हाशिए पर था, इसलिए उनके बड़े होने के दौरान वे कई बुनियादी जरूरतों से वंचित रही थीं, इसके बावजूद उन्होंने अपने समुदाय के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कई अभूतपूर्व प्रयास किए हैं। इसके अलावा उन्होंने अपने काम के दौरान कई तरह के सामाजिक अन्यायों के विरुद्ध लड़ाईयाँ भी लड़ी हैं।

कोविड–19 महामारी के दौरान उन्होंने अपने समुदाय और लोगों की बेहतरी के लिए जो प्रयास किए हैं और जो असाधारण योगदान दिया है, उसके बल पर वे वास्तव में एक कोविड योद्धा के रूप में पुरस्कृत होने की अधिकारी हैं।

अनंत बजाज स्मृति बैडमिंटन टूर्नामेंट

बजाज सी.एस.आर. ने प्रतिष्ठित पुलेला गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी, हैदराबाद के साथ मिलकर ''अनंत बजाज मेमोरियल BAI सिरीज सीनियर बैडमिंटन टूर्नामेंट–2021'' आयोजित किये।

अनंत अपनी प्रतिस्पर्धात्मक भावना के लिये जाने जाते थे। अपना जीवन दर्शन Hungry (सफलता की भूख) Crazy (पागलपन की हद तक सोच) Spectacular (सभ्यता का निर्माण) वह खेलों के जरिये प्रदर्शित करते थे। उनके सपने को आगे ले जाते हुए इस नई भागीदारी ने टूर्नामेंट का आयोजन किया जहाँ इस प्रतिष्ठित पुरस्कारों को पाने के लिये 24 से 30 दिसम्बर 2021 के बीच हैदराबाद में हजारों युवा खिलाड़ियों ने प्रतिस्पर्धा में भाग लिया।

आयोजन का उद्घाटन मा0 खेल मंत्री श्री श्रीनिवास गौड़ ने किया। साथ में थे श्री पुलेला गोपीचंद (भारतीय बैडमिंटन टीम के मुख्य राष्ट्रीय कोच), श्रीकांत किदंबी (भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी, पद्मश्री, व अर्जुन पुरस्कार विजेता) बी.साई प्रनीत (भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी व अर्जुन पुरस्कार विजेता और श्रीमती पूजा बजाज (जिन्होंने बजाज सी.एस.आर. का प्रतिनिधित्व किया।)

जोश से भरपूर फाइनल मैचों के दौर का समापन एक भव्य अभिनंदन समारोह में संपन्न हुआ जहाँ तेलंगाना के आई.टी. विभाग के प्रधान सचिव श्री जयंश रंजन (आई.ए.एस.), श्री पुलेला गोपीचंद, सुश्री साइना नेहवाल (विश्व की पूर्व सर्वश्रेष्ठ भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी) तथा श्रीमती पूजा बजाज।

अनंत बजाज को बैडमिंटन का खेल बहुत प्रिय था और उनकी कामना थी कि विश्व स्तर पर ज्यादा से ज्यादा चैंपियन भारत के हों। बजाज सी.एस.आर. इस तरह के अन्य पटलों से भागीदारी कर तथा भावी पीढ़ियों को प्रेरणा देकर अनंत के सपनों को आगे ले जा रहा है।

मध्य में भारत की पूर्व विश्व बैडमिंटन विजेता साइना नेहवाल (नीली जर्सी में) उनके दाएं – श्रीमती पूजा बजाज और श्री मयंक अग्रवाल (केसरी जर्सी में) विजेता खिलाडियों के साथ।

सम्मान

श्री उदयप्रताप सिंह को साहित्यिक संस्था 'अनुभूति' द्वारा 'अनुभूति सम्मान'

अनुभूति संस्था द्वारा सम्मान पत्र प्राप्त करते हुए।

शब्दम् उपाध्यक्ष, वरिष्ठ कवि एवं पूर्व सांसद श्री उदयप्रताप सिंह को साहित्यिक संस्था अनुभूति द्वारा अनुभूति सम्मान से सम्मानित किया गया। अनुभूति संस्था द्वारा प्रतिवर्ष यह पुरस्कार हिन्दी के वरिष्ठ कलमकारों को प्रदान किया जाता है। श्री उदयप्रताप सिंह उ.प्र. प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष रह चुके हैं। देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी उनकी कविताओं का बोलबाला रहा है। श्री उदयप्रताप सिंह को विगत में भी विभिन्न साहित्यिक सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

इस अवसर पर शब्दम् अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज, शब्दम् सलाहकार मण्डल और समस्त शब्दम् परिवार, श्री उदयप्रताप जी को, उनके स्वस्थ, सक्रिय जीवन की शुभकामनाएँ देते हुए, हार्दिक बधाई सादर प्रेषित करता है।

'नए दोहे'

– उदयप्रताप सिंह

दाना चुगना नीड़ में, उड़ना पंख पसार
हमसे ज़्यादा सुखी है चिड़ियों का संसार

चिंता भूत, भविष्य की वर्तमान से दूर
दुखी आदमी है बहुत आदत से मजबूर

जीवन रहे जमीन पर, सपनो में आकाश
दूर भला कैसे करें, मानव का संत्रास

नापसन्द मिलता रहा, मिलता नहीं पसंद
पीड़ा का ये मूल है मन का अंतर द्वंद्व

प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, समता, पर उपकार
इन शब्दों में निहित है, सब धर्मों का सार

स्वर्ग, नर्क अनुभूति हैं, कर्मों के अनुसार
दोनों की बुनियाद में, अच्छे बुरे विचार

भाग्य नियामक स्वयं है, अपना हर इंसान
लगन परिश्रम तय करे पतन और उत्थान

पालें औरों के लिए आस्तीन में सांप
उनके मन में सुख नहीं, रहता है संताप

कविता केवल मनोरंजन का साधन ही नहीं जीवन की समस्याओं का समाधान भी : उदय प्रताप सिंह

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

चेन्नई. राजनेता और साहित्यकार उदय प्रताप सिंह ने अपने साहित्यिक और राजनीतिक अनुभव से रविवार को चेन्नई के श्रोताओं में नए और सकारात्मक विचारों का उदय किया। अपने काव्य संसार की रश्मियों से उन्होंने लोगों को जीवन का परिचय कराते हुए कहा कि कविता मनोरंजन का साधन ही नहीं जीवन की समस्याओं का समाधान भी है।

वे रविवार को साहित्यिक संस्था अनुभूति द्वारा अनुभूति सम्मान से नवाजे जाने के बाद डीजी वैष्णव कॉलेज प्रांगण में सभासदों का अभिवादन कर रहे थे। अमूल्य साहित्यिक योगदान के लिए हिंदी कलमकारों को यह सम्मान प्रति वर्ष अनुभूति द्वारा प्रदान किया जाता है।

अनुभूति संस्था के अध्यक्ष रमेश गुप्त नीरद, महासचिव शोभा चोरड़िया, सचिव डॉ. सुनीता जाजोदिया, चेयरमैन गोविंद मूंदड़ा ने गणमान्य लोगों की उपस्थिति में उदय प्रताप को सम्मानित किया। गोविंद मूंदड़ा ने उनका परिचय कराया। इससे पहले रमेश गुप्त नीरद ने अनुभूति के बारे में बताया। मुख्य अतिथि ने शोभा चोरड़िया की पुस्तक भावों की पुड़िया का विमोचन किया।

कवि जनता का प्रतिनिधि

सम्मान के बाद उदय प्रताप ने श्रोताओं को अपने काव्य पाठ और गजल से बांधे रखा। प्रत्येक छंद की प्रस्तुति तालियों की गड़गड़ाहट पर ही समाप्त हुई। कवि ने अपनी रचनाओं से कई मिसालें पेश की कि कविता मनोरंजन मात्र की नहीं होती यह जीवन की समस्याओं का समाधान भी होती हैं। कवि बिना चुने ही जनता का प्रतिनिधि होता है और उनके दुख दर्द की बात करने के साथ ही समाधान भी पेश करता है।

रामायण और चांदनी के छंद

उन्होंने रामायण पर आधारित छंद सुनाते हुए सीख दी कि नई पीढ़ी को अगर संस्कार देने हैं तो भगवान राम ही श्रेष्ठ सुपात्र हैं। इस संदर्भ में कवि उदय प्रताप ने विश्वमोहिनी स्वरूप जननी को मोह लिया... जननी ने किए हैं जघन्य से जघन्य पाप... नल-नील पाहनो पे राम नाम लिख...व्यंग्य मंदोदरी ने किया एक रावण पर... आदि छंद पेश कर वाहवाही लूटी। उनके चांदनी पर सुनाए गए छंद दिल को छू गए। तो साथ ही कवि ने जीवन, चिंता और मृत्यु के मर्म को भी बड़ी ही खूबसूरती से समझाया।

सम्मान

डॉ. चन्द्रवीर जैन को 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान' द्वारा डॉ. जगदीश गुप्त सर्जना पुरस्कार प्रदान

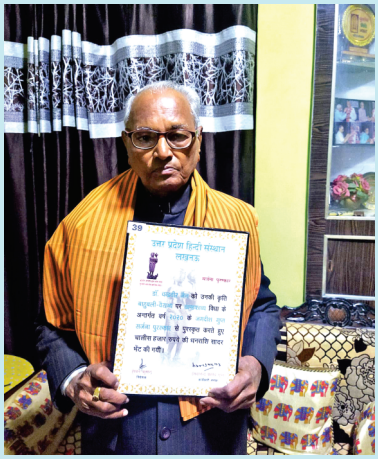

शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ. चन्द्रवीर जैन को 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान' द्वारा उनके खंडकाव्य 'बाहुबली वैराग्य' पर डॉ. जगदीश गुप्त सर्जना पुरस्कार प्रदान किया गया है। इससे पूर्व भी डॉ. जैन को विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। डॉ. जैन बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। उनके निर्देशन में विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र–छात्राओं को डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया जा चुका है। उनके निर्देशन का क्रम आज भी जारी है।

मंज़र-उल वासै 'सेवारत्न' सम्मान से अलंकृत

शब्दम् सलाहकार मंडल के सदस्य एवं 'प्रश्नमंच उपसमिति' के अध्यक्ष मंज़र–उल वासै को 'समाजसेवा समिति' ने 'सेवारत्न' सम्मान से अलंकृत किया है। इससे पूर्व 'भारतीय साहित्य परिषद–न्यास' दिल्ली (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की आनुषंगिक संस्था) द्वारा दोबार सम्मानित किया जा चुका है। आगरा की बाबू गुलाबराय स्मृति सम्मान पुरस्कार से भी विभूषित किये जाने के अतिरिक्त उनको विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान पुरस्कारों से भी अलंकृत किया जा चुका है।

ऑनलाइन जागरूकता

विभिन्न अवसरों पर ई-कार्ड्स् के माध्यम से शब्दम् द्वारा ऑनलाइन जागरूकता

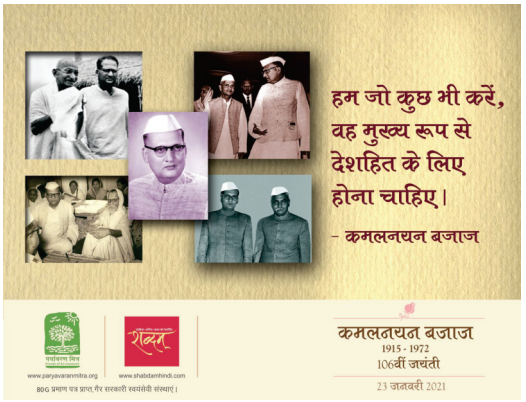

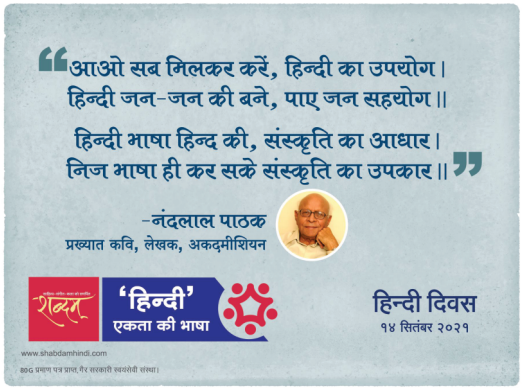
"आओ सब मिलकर करें, हिन्दी का उपयोग।
हिन्दी जन-जन की बने, पाए जन सहयोग॥
हिन्दी भाषा हिन्द की, संस्कृति का आधार।
निज भाषा ही कर सके संस्कृति का उपकार॥"
-नंदलाल पाठक
प्रख्यात कवि, लेखक, अकदमीशियन
'हिन्दी'
एकता की भाषा
हिन्दी दिवस
१४ सितंबर २०२१
www.shabdamhindi.com

प्रदूषण के ज़हर पर विजय की कामना के साथ
शुभ दशहरा
साफ़ हरित व सुखद दशहरा
www.paryavaranmitra.com
www.shabdamhindi.com

प्रिय पालको,
अपनी बेटियों को
देवी दुर्गा बनाइए।
उन्हें शिक्षा के साथ अच्छे संस्कार, जन्मसिद्ध अधिकार के साथ
ज़िम्मेदारी, आत्मविश्वास के साथ विवेक और स्वतंत्रता के साथ
सच्चरित्र दें।
नारी के असली तत्त्व का उत्सव मनाइए।
शुभ दुर्गाष्टमी
www.shabdamhindi.com
www.paryavaranmitra.com

प्रिय बच्चो,
कोविड महामारी के दौरान
अपने माता-पिता व शिक्षकों का कहना
मानने तथा एक अच्छे व ज़िम्मेदार
नन्हें भारतीय होने के लिए
बहुत-बहुत धन्यवाद ।
हमारी कामना है कि जल्द ही
आपको एक सुरक्षित, सामान्य व
मौज-मज़े से भरा भविष्य मिले।
बाल
दिवस
14 नवम्बर
www.paryavaranmitra.com
www.shabdamhindi.com

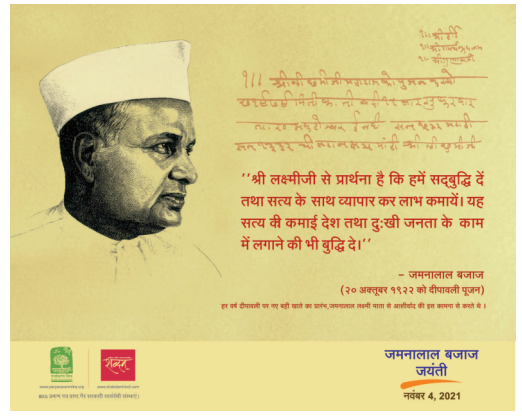
''श्री लक्ष्मीजी से प्रार्थना है कि हमें सद्बुद्धि दें
तथा सत्य के साथ व्यापार कर लाभ कमायें। यह
सत्य की कमाई देश तथा दुःखी जनता के काम
में लगाने की भी बुद्धि दे।''
- जमनालाल बजाज
(२० अक्तूबर १९२२ को दीपावली पूजन)
जमनालाल बजाज
जयंती
नवंबर 4, 2021

आइए हम कुछ अलग तरीक़ों से
बेहतर दीवाली मनाएँ
रीसाइकल किये काग़ज़ से बहुरंगी तोरण
एवं जैविक रंगों तथा पत्तियों से रंगोली सजाएँ।
अपने मित्रों को रसोई में काम आने वाले
नसाख़ों एवं पर्यावरण हितैषी पौधे भेंट करें।
अपने घर को पौधों और हल्के व पुनर्प्रयोग
किये जा सकने वाले दीयों से सजाएँ।
अपने घर में लाउडस्पीकर व पटाख़ों के
शोर की बजाय मधुर संगीत का आनंद लें।
अपने घर के अंदर और बाहर सफ़ाई रखें।
शुभ-स्वस्थ
दीपावली

निधन वार्ता

प्रसिद्ध कहानी लेखिका मन्नू भंडारी अब रही...

3 अप्रैल 1931 में जन्मी मन्नू भंडारी का निधन 15 नवम्बर 2021 को हो गया है। वह हिंदी की प्रसिद्ध कथाकार थीं और प्रसिद्ध कथाकार हंस के संपादक राजेंद्र यादव की पत्नी थीं। आपके 'बंटी' और 'महाभोज' जैसे उनके उपन्यासों से हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है। आपका 'बंटी' उपन्यास पर 'समय की धारा' नामक फिल्म भी बनी थी। उनके अनेक कथा संग्रह हैं जिनमें 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'यही सच है' आदि प्रसिद्ध हैं। मन्नू भंडारी स्त्री विमर्श की रचनाकार थीं। अपने पति राजेन्द्र यादव की पुरुषवादी सोच का वह विरोध करती रहीं। आपको 'बंटी' और 'महाभोज' उपन्यास से उन्हें बहुत प्रसिद्धि मिली।

शब्दम् संस्था की अध्यक्ष श्रीमती किरण बजाज ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा है,''मन्नू भंडारी हिंदी की शीर्ष कथाकार थीं।उनके निधन से हिंदी साहित्य को अपूरणीय क्षति हुई है।''

बिरजू महाराज

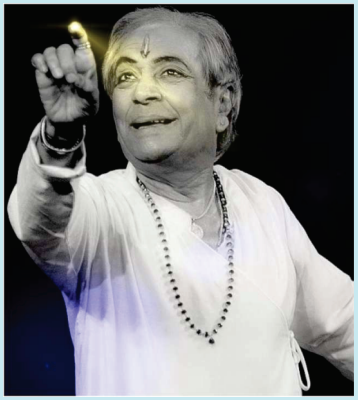

बिरजू महाराज भारत के प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कलाकारों में से एक थे। वे भारतीय शास्त्रीय नृत्य की 'कथक' शैली के आचार्य और लखनऊ के 'कालका–बिंदादीन' घराने के एक मुख्य प्रतिनिधि थे। विनम्रता, सहजता, सरलता उनके नृत्य व विचारों दोनों में दर्शित प्रतिबिंबित थी।

बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी, 1938 को लखनऊ, उत्तर प्रदेश के 'कालका बिन्दादीन घराने' में हुआ था। पहले उनका नाम 'दुखहरण' रखा गया था, जो बाद में बदल कर 'बृजमोहन नाथ मिश्रा' हुआ। इनके पिता का नाम जगन्नाथ महाराज था, जो 'लखनऊ घराने' से थे और अच्छन महाराज के नाम से जाने जाते थे। अच्छन महाराज की गोद में महज तीन साल की उम्र में ही बिरजू की प्रतिभा दिखने लगी थी। इसी को देखते हुए पिता ने बचपन से ही अपने यशस्वी पुत्र को कला दीक्षा देनी शुरू कर दी। किंतु इनके पिता की शीघ्र ही मृत्यु हो जाने के बाद उनके चाचाओं, सुप्रसिद्ध आचार्यों शंभू और लच्छू महाराज ने उन्हें प्रशिक्षित किया। कला के सहारे ही बिरजू महाराज को लक्ष्मी मिलती रही। उनके सिर से पिता का साया उस समय उठा, जब वह महज नौ साल के थे।

इन्होंने विभिन्न प्रकार की नृत्यावालियों जैसे गोवर्धन लीला, माखन चोरी, मालती–माधव, कुमार संभव व फाग बहार इत्यादि की रचना की। इन्हें ताल वाद्यों की विशिष्ट अंतप्रेरणा भरी समझ थी, जैसे तबला, पखावज, ढोलक, नाल और तार वाले वाद्य वायलिन, स्वर मंडल व सितार इत्यादि के सुरों का भी इन्हें गहरा ज्ञान था। इन्होंने हजारों संगीत प्रस्तुतियां भारत एंव भारत के बहार भी दीं।

बिरजू महाराज ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ही नई दिल्ली के संगीत भारती में नृत्य की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। उसके बाद उन्होंने दिल्ली में ही भारतीय कला केन्द्र में सिखाना आरम्भ किया। कुछ समय बाद इन्होंने कत्थक केन्द्र (संगीत नाटक अकादमी की एक इकाई) में शिक्षण कार्य आरम्भ किया। यहां ये संकाय के अध्यक्ष थे तथा निदेशक भी रहे। तत्पश्चात 1998 में इन्होंने वहीं से सेवानिवृत्ति पायी। इसके बाद कलाश्रम नाम से दिल्ली में ही एक नाट्य विद्यालय खोला।

इन्होंने सत्यजीत राय की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी की संगीत रचना की, तथा उसके दो गानों पर नृत्य के लिये गायन भी किया। इसके अलावा वर्ष 2002 में बनी हिन्दी फिल्म देवदास में एक गाने काहे छेड़ छेड़ मोहे का नृत्य संयोजन भी किया। इसके अलावा अन्य कई हिन्दी फिल्मों जैसे डेढ़ इश्किया, उमराव जान तथा संजय लीला भन्साली निर्देशित बाजीराव मस्तानी में भी कत्थक नृत्य के संयोजन किये।

पुरस्कार एवं सम्मान

बिरजू महाराज ने कई प्रतिष्ठित पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किए और प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार 'संगीत नाटक अकादमी', 'पद्म विभूषण' 1956 में प्राप्त किया। मध्य प्रदेश सरकार सरकार द्वारा इन्हें 'कालिदास सम्मान' मिला व 'सोवियत लैंड नेहरू अवार्ड', 'एस एन ए अवार्ड' व 'संगम कला अवार्ड' भी इन्हें प्राप्त हुए। इन्हें नेहरू फैलोशिप के अलावा दो डॉक्टरेट की मानद उपाधियां भी प्राप्त हुई, इनके साथ ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की उपाधि मानद मिली। 2016 में हिन्दी फिल्म बाजीराव मस्तानी में 'मोहे रंग दो लाल' गाने पर नृत्य–निर्देशन के लिये फिल्मफेयर पुरस्कार मिला। 2002 में लता मंगेश्कर पुरस्कार, 2012 मे सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशन हेतु राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार फिल्म विश्वरूपम के लिए।

17 जनवरी 2022 को कथ्क सम्राट बिरजू महाराज का देहावसान हो गया किन्तु उनकी कथ्क कला–कीर्ति अमर रहेगी।

महात्मा कन्फ़्यूशियस

महात्मा कन्फ़्यूशियस को किसी ने पूछा कि ''अगर आपको किसी देश पर शासन करने का अवसर मिले तो सबसे पहले आप क्या करेंगे?''

''सबसे पहले वहाँ की भाषा शुद्ध करने का प्रयत्न करूँगा।'' कन्फ़्यूशियस ने जवाब दिया।

''लेकिन महात्मन्! भाषा–शुद्धि का शासन से क्या संबंध है?''

''भाषा अशुद्ध हो तो उसके द्वारा मन के भाव बराबर व्यक्त नहीं होते और जब भाव बराबर नहीं होते तो न करने जैसे काम हो जाते हैं। और जब अनुचित काम होते हैं, तब सांस्कृतिक प्रवृत्तियों का और नैतिकता का अंत होता है। और जहां नैतिकता का अंत आता है, वहां न्याय कैसे टिक सकता है? और न्याय के बिना अराजकता का फैलना स्वाभाविक है। और जहाँ अराजकता फैले वहा शासन किस तरह किया जाये? इसलिए भाषा–शुद्धि की अनिवार्यता सर्वोपरि है।''